

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

02-फरवरी-2016 15:47 IST

कोयम्बटूर में ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन अवसर पर प्रधानमंत्री के संबोधन का पाठ

वणक्कम,

दक्षिण भारत की कपड़ा राजधानी और तमिलनाडु के व्यावसायिक केन्द्र कोयम्बटूर में मेडिकल कॉलेज और अस्पताल के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन करने के लिए आप सभी के बीच आकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। इस अवसर पर, केन्द्र सरकार ने मौजूदा अस्पताल, मेडिकल कॉलेज और अन्य संबंधित इमारतें भी तमिलनाडु सरकार को सौंप दी हैं। यह मेरी सरकार की सहकारी संघवाद की प्रतिबद्धता को पुष्ट करता है। मुझे आशा है कि तमिलनाडु सरकार कॉलेज को शुरू करने के लिए तेजी से काम करेगी।

580 करोड़ रुपये की यह परियोजना ईएसआईसी लाभार्थियों और कोयंबटूर के आसपास रहने वाले उनके परिवार के सदस्यों के लिए एक वरदान साबित होगी। यहां एमबीबीएस की सौ सीटें प्रस्तावित हैं, इनमें से 20 सीटें ईएसआईसी योजना के तहत बीमित व्यक्तियों के बच्चों के लिए आरक्षित होंगी। हमें इस मेडिकल कॉलेज और अस्पताल को राज्य के श्रमिकों के उपचार और उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा शिक्षा का मॉडल बनाने का प्रयास करना चाहिए।

मेरी सरकार सभी श्रमिकों के लिए एक उदार और व्यापक सामाजिक सुरक्षा तंत्र का विकास करने के लिए प्रतिबद्ध है। असंगठित क्षेत्र के 45 करोड़ से अधिक श्रमिकों के लिए हमने आरएसबीवाई स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रम के तहत प्रधानमंत्री जीवन ज्योति योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना और जीवन एवं दुर्घटना बीमा प्रदान करने के लिए अटल पेंशन योजना की शुरुआत की है। आधुनिक भारत के निर्माताओं की यह प्रतिबद्धता उस दृढ़ विश्वास से आती है जिसके अनुसार, 'स्वस्थ एवं समृद्ध श्रमिक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण करता है।'

हमने संगठित क्षेत्रों के कर्मचारियों के लाभ के लिए ईपीएफओ और ईएसआईसी में अहम सुधारों की पहल की है। इस क्षेत्र के छह करोड़ से अधिक श्रमिकों को यूनिवर्सल खाता संख्या (यूएएन) आवंटित कर दिया गया है, ताकि उनके ईपीएफ खातों को पोर्टेबिलिटी में सक्षम बनाया जा सके। आगे हम इसके दायरे का विस्तार और ईएसआईसी के जरिए अतिरिक्त सुविधाओं और सेवाओं की पेशकश करने का प्रस्ताव कर रहे हैं।

ईएसआई योजना गांधीवादी सिद्धांत "क्षमता के अनुसार योगदान और आवश्यकता के अनुसार लाभ" पर आधारित है। यह सिद्धांत एक बीमित व्यक्ति अथवा उसके परिवार के सदस्यों को उसकी मजदूरी के अनुपात में योगदान करने पर एक समान लाभ उपलब्ध कराता है। चिकित्सा लाभों के अलावा ईएसआईसी बीमित व्यक्ति को बीमारी, विकलांगता, आश्रय, प्रसूति और बेरोजगारी भत्ते के लाभ भी उपलब्ध कराता है। खर्च पर कोई प्रतिबंध न होना इसका एक अद्वितीय चरित्र है, उदाहरण के लिए ऐसे मामलों में जहां उपचार खर्च 30 से 40 लाख से अधिक है। इसका अर्थ यह हुआ कि ईएसआईसी स्वास्थ्य योजना लाखों श्रमिकों के लिए एक वरदान है।

मित्रो, 1952 में महज दो केंद्रों कानपुर और दिल्ली से इसकी शुरुआत हुई थी। आज ईएसआई योजना 34 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 830 केंद्रों में चल रही है। इसके तहत देश भर में सात लाख फैक्ट्रियां और प्रतिष्ठान तथा दो करोड़ श्रमिक व आठ करोड़ लाभकर्ता आते हैं। तमिलनाडु में इस योजना में 85 हजार से अधिक नियोक्ता और 28 लाख से अधिक बीमित लोग हैं। अकेले कोयंबटूर में ही लगभग 27 हजार नियोक्ता हैं। यह योजना तमिलनाडु के 31 जिलों में उपलब्ध है।

तमिलनाडु में दस ईएसआई अस्पताल हैं। इस अस्पताल को सौंपने के बाद वहां राज्य सरकार द्वारा संचालित ईएसआई अस्पतालों की संख्या आठ हो जाएगी। ईएसआईसी अस्पताल तिरुनेलवेली को 50 बेड से बढ़ाकर 100 बेड का करने का प्रस्ताव है। बीमित व्यक्तियों और उनके परिवार के सदस्यों के इलाज के लिए राज्य में 210 ईएसआई डिसपेंसरी का एक बड़ा नेटवर्क है। अकेले कोयंबटूर में ऐसी 50 डिसपेंसरियां हैं।

मेरी सरकार हमारे उन भाइयों और बहनों के कल्याण के लिए समर्पित हैं, जो हमारे राष्ट्र निर्माता हैं। ईएसआईसी के विस्तार की जरूरत को महसूस करते हुए मैंने पिछले साल जुलाई में नई दिल्ली में हुए भारतीय मजदूर सम्मेलन के दौरान दूसरी पीढ़ी के सुधार का एजेंडा ईएसआईसी 2.0 नाम से शुरू किया था।

ईएसआई योजना का दायरा पूर्वोत्तर के शेष बचे राज्यों अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, मणिपुर और अंडमान निकोबार द्वीप समूहों तक बढ़ा दिया गया है। इस साल 31 मार्च तक इसे जिले में केवल औद्योगिक एवं वाणिज्यिक क्षेत्र से बढ़ाकर पूरे जिले तक विस्तार देने का प्रस्ताव है। पिछले साल पहली अगस्त से इस योजना को निर्माण क्षेत्र के श्रमिकों तक बढ़ा दिया गया है।

सार्वजनिक सेवा वितरण मानकों के सुधार में मेरा दृढ़ विश्वास है। इसे ध्यान में रखते हुए ईएसआई अस्पतालों में सेवा की गुणवत्ता सुधारने के लिए कई पहलें की गई हैं। इनमें ईएसआई लाभार्थियों के इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य रिकॉर्ड की ऑनलाइन उपलब्धता, एक आपातकालीन चिकित्सा ऑनलाइन प्रणाली की स्थापना और वरिष्ठ नागरिकों एवं विकलांग व्यक्तियों के लिए ईएसआई अस्पतालों में विशेष वाह्य रोगी सेवाओं का निर्माण शामिल हैं। साफ-सफाई में सुधार के लिए 'इंद्रधनुष अभियान' के तहत सप्ताह के प्रत्येक दिन इंद्रधनुष के रंगों की तर्ज पर अस्पताल के बिस्तरों की चादरें बदली जाती हैं। सफाई रोग निवारक स्वास्थ्य सेवा का एक महत्वपूर्ण पहलू है। अध्ययनों से पता चला है कि साफ-सफाई रखने से एक गरीब परिवार प्रति वर्ष सात हजार रुपये की बचत कर सकता है।

अन्य पहलों में ईएसआईसी ने प्रत्येक राज्य में जच्चा-बच्चा अस्पताल से इतर दो मॉडल अस्पतालों को अपनाने का संकल्प लिया है। मुझे खुशी है कि ईएसआईसी अपनी सेवाओं को पूरा करने के बाद सरकारी निजी भागीदारी के जरिए अपने दायरे का विस्तार करने का प्रस्ताव कर रहा है। इसके अलावा कैंसर का पता लगाने, कॉर्डियोलॉजी उपचार और डॉयलिसिस से इतर चरणबद्ध तरीके से सभी डिस्पेंसरियों में पीपीपी के माध्यम से एक्सरे और पैथोलॉजी सुविधाएं शुरू करने का प्रस्ताव है। एलोपैथिक उपचार के अलावा ईएसआईसी अस्पताल चरणबद्ध तरीके से आयुष उपचार भी उपलब्ध कराएंगे।

मित्रो, मेरी सरकार ने हमारे देश के श्रमबल के कल्याण के लिए कई अनोखे कदम उठाए हैं। सितंबर, 2014 में हमने कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) पेंशन को संशोधित कर न्यूनतम एक हजार रुपये प्रति माह कर दिया। ईपीएफ लाभ लेने के लिए वेतन सीमा को 6500 से बढ़ाकर 15,000 रुपये कर दिया गया। श्रमिकों और नियोक्ताओं तक अपनी सेवाओं की आसान पहुंच के लिए एक ईपीएफओ मोबाइल एप भी शुरू किया गया है। बोनस अधिनियम में पात्रता और बोनस देय की सीमा बढ़ाने के लिए इसे संशोधित कर क्रमशः 21000 और 7000 रुपये प्रति माह कर दिया गया है।

“न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन” की हमारी प्रतिबद्धता को ध्यान में रखते हुए मंत्रालय ने केंद्रीय श्रम कानूनों को सरल बनाते हुए 44 मौजूदा कानूनों को चार श्रम संहिताओं में तब्दील कर दिया गया है। अर्थात् मजदूरी, औद्योगिक संबंध, रक्षा-सुरक्षा और स्वास्थ्य। इससे श्रमिकों के अधिकारों और उनकी वास्तविक सुरक्षा से समझौता किए बिना कारोबार सुगमता में वृद्धि तथा रोजगार का सृजन होगा। हम श्रम सुधारों की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। इन पर आम सहमति बनाने के लिए नियोक्ताओं, श्रमिक प्रतिनिधियों और राज्य सरकारों के साथ सभी हितधारकों के साथ सघन विचार-विमर्श किया जा रहा है।

व्यापार की पारदर्शी और कभी कभार निरीक्षण की एक प्रक्रिया के प्रबंध सहित 16 श्रम कानूनों से संबंधित ऑनलाइन सेवाओं के लिए एक श्रम सुविधा पोर्टल बनाया गया है। करीब दस लाख नियोक्ताओं को एक एलआईएन नंबर जारी किया गया है। यह उन्हें आठ श्रम कानूनों पर एकल ऑनलाइन फाइलिंग प्रक्रिया में सक्षम बनाएगा। ईएसआईसी और ईपीएफओ द्वारा दी जाने वाली सेवाओं को व्यापार की सुगमता और लेनदेन लागत की सीमा निर्धारित करने के लिए औद्योगिक नीति और संवर्द्धन विभाग के ई-बिज पोर्टल के साथ जोड़ दिया गया है। इसके अलावा श्रमिकों एवं नियोक्ताओं का दायरा बढ़ाने, ज्यादा विकल्प उपलब्ध कराने और संगठित क्षेत्र के श्रमिकों के लिए सेवाओं को विस्तार देने तथा उन्हें बेहतर बनाने के लिए नए ईपीएफओ और ईएसआईसी अधिनियमों का प्रस्ताव है।

हमारी योजना ईएसआईसी सुविधाओं के विस्तार की है। वास्तव में इस कॉलेज की स्थापना चिकित्सा शिक्षा एवं स्पेशलाइज्ड टर्शरी केयर के लिए सुविधाओं को उन्नत बनाने की बड़ी योजना का हिस्सा है।

हमने राज्य और केंद्र सरकार के मौजूदा मेडिकल कॉलेजों के उन्नयन के लिए एमबीबीएस की सीटों में वृद्धि की एक योजना को मंजूरी दी है। हम उम्मीद करते हैं कि इस तरह एमबीबीएस की दस हजार सीटें बढ़ेंगी और मेडिकल कॉलेजों को उपकरणों और बुनियादी ढांचे के लिए निधि उपलब्ध होगी। अभी तक 23 मेडिकल कॉलेजों को 1700 एमबीबीएस सीटें

बढ़ाने की मंजूरी मिली है। मुझे आपको यह जानकारी देकर खुशी हो रही है कि तमिलनाडु में कोयंबटूर, कन्याकुमारी, तिरुनेलवेली और मदुरै में चार राजकीय मेडिकल कॉलेजों के उन्नयन को मंजूरी मिल गई है। इनमें एमबीबीएस की 345 और सीटों को जोड़ा जाएगा।

इसी तरह के उद्देश्य के साथ हम देश भर में एम्स जैसे संस्थानों की स्थापना को बढ़ावा दे रहे हैं। एक ऐसे ही संस्थान के लिए तमिलनाडु का भी अनुमोदन किया गया है। मुझे आशा है कि राज्य सरकार के सक्रिय सहयोग से इस संस्थान में प्रवेश जल्द ही शुरू हो सकेगा।

मित्रो, हम सभी जानते हैं कि भारत रत्न डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर संविधान के जनक हैं, लेकिन बहुतों को शायद ही पता होगा कि हमारे श्रम कानूनों के निर्माण में बाबा साहेब का बहुत बड़ा योगदान रहा है। मुझे आपको यह बताते हुए खुशी हो रही है कि श्रम एवं रोजगार मंत्रालय ने बाबा साहेब के 125वें जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में पिछले महीने नई दिल्ली में एक सम्मेलन का आयोजन किया था। मैं आप सभी से इस अवसर पर जारी की गई पुस्तिका 'डा. बीआर अंबेडकर - सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता: उनकी परिकल्पना को वास्तविक रूप देने की पहल' को पढ़ने का आग्रह करता हूँ। श्रम कल्याण को लेकर डॉ. अंबेडकर की परिकल्पना को साकार करने की खातिर हम सामूहिक रूप से और आपसी सहयोग से काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

मित्रों, औद्योगिक शांति और सद्भाव तभी प्राप्त हो सकता है, जब रोजगार और रोजगार क्षमता के लक्ष्य औद्योगिक विकास और वृद्धि के लक्ष्यों के साथ-साथ चलें। हमारी साझी परिकल्पना ऐसे माहौल की है जो समावेशी विकास और देश के विकास के अनुकूल हों। मैं राज्य सरकार को इस दिशा में उसके प्रयासों के लिए केंद्र सरकार की ओर से हरसंभव सहयोग का आश्वासन देता हूँ।

भारत के श्रम बल के कल्याण के लिए मैं अधिक काम को प्रोत्साहित कर रहा हूँ, ताकि "भारत सभी के काम करने के लिए एक अच्छा कार्यस्थल बन सके"।

आइए देश को एक अच्छा कार्यस्थल और रहने के लिए बेहतरीन स्थान बनाने के लिए मिलकर काम करते हैं।

जयहिंद!

एजेएस/एमएस-653

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

02-फरवरी-2016 13:15 IST

कोड़ीकोड के विश्व आयुर्वेद महोत्सव में विज्ञान कॉन्क्लेव में प्रधानमंत्री के भाषण का मूलपाठ

नमस्कार, गणमान्य अतिथियों, देवियों और सज्जनों!

केरल में विश्व आयुर्वेद महोत्सव के अंतर्गत विज्ञान कॉन्क्लेव के उद्घाटन समारोह में उपस्थित होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है।

केरल परम्परागत आयुर्वेद का मुख्य केंद्र है। ऐसा महज़ इसलिए नहीं है कि राज्य में आयुर्वेद की लंबी, अविच्छिन्न परिपाटी रही है, बल्कि इसलिए भी है कि यहां की प्रामाणिक औषधियां एवं चिकित्सा पद्धतियां विश्व प्रसिद्ध हैं, और अब विशाल, तेज़ी से बढ़ते आयुर्वेदिक चिकित्सालयों एवं स्वास्थ्य केंद्रों के तंत्र के कारण ऐसा है।

मुझे बताया गया है कि यह पांच दिवसीय विश्व आयुर्वेद महोत्सव आयुर्वेद के विभिन्न पहलुओं पर सहभागिता एवं हिस्सेदारी के दृष्टिकोण से अत्युत्तम रहा है।

यह जानना सुखद है कि विभिन्न देशों से बड़ी संख्या में विदेशी प्रतिनिधि आयुर्वेद महोत्सव में भाग लेने के लिए आए हैं। मैं आश्वस्त हूँ कि महोत्सव में उनकी भागीदारी आयुर्वेद के प्रचार प्रसार को प्रोत्साहित करेगी।

भारत में ऋषियों एवं संन्यासियों की लंबी परम्परा है जिन्होंने स्वयं अपनी स्वदेशी स्वास्थ्य सेवाओं का तंत्र विकसित किया, जैसे आयुर्वेद, योग एवं सिद्ध पद्धतियां।

समय बीतने के साथ हमने विभिन्न सभ्यताओं से वार्तालाप किया और दूसरी चिकित्सा पद्धतियों का समावेश भी किया।

यह सभी पद्धतियां “सर्वे भवन्तु सुखिन, सर्वे सन्तु निरामयः” यानी 'सभी प्रसन्न रहें, सभी स्वस्थ रहें' के दर्शन पर आधारित थीं।

आयुर्वेद को सामान्यतया जीवन के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जाता है- 'आयु' यानी जीवन एवं 'वेद' यानी विज्ञान। सुश्रुत ने स्वास्थ्य की परिभाषा यह दी है:

समदोषः समाग्निश्च समधातु मलःक्रियाः।

प्रसन्नात्मेन्द्रियमनः स्वस्थइतिअभिधीयते॥

अर्थात् यदि सभी त्रिदोष अथवा जैव ऊर्जा एवं अग्नि अथवा चयापचय की प्रक्रिया संतुलित रहती है, और यथोचित मलोत्सर्जन होता है तब स्वास्थ्य संतुलित रहता है। जब आत्मा, इंद्रियां, मन या बुद्धि आंतरिक शांति के साथ तारतम्य में होते हैं- सर्वोत्कृष्ट स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

इस परिभाषा की तुलना विश्व स्वास्थ्य संगठन की परिभाषा से कीजिए: स्वास्थ्य शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक स्तरों पर पूर्णतः तंदुरुस्त होने की स्थिति को कहा जाता है- न कि महज़ रोग या दौर्बल्य की अनुपस्थिति को। लिहाज़ा आप देख सकते हैं कि आयुर्वेद के सिद्धांत विश्व स्वास्थ्य संगठन की ओर से दी गई परिभाषा के साथ लयबद्ध हैं।

स्वास्थ्य पूर्णतः तंदुरुस्त होने की स्थिति को कहा जाता है एवं रोग रहित होने को नहीं।

आज आयुर्वेद के विशद एवं समग्र दृष्टिकोण के कारण इसकी वैश्विक प्रासंगिकता है।

आयुर्वेद के मतानुसार 'दिनचर्या' जीवन में शांति एवं समरसता लाने में सहायता प्रदान करती है। आयुर्वेदिक चर्या मनुष्य के जीवन में संपूर्ण स्वास्थ्य संवर्धन, मानसिक एवं शारीरिक, को ध्यान में रख कर बनाई गई है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में वो कौन सी चुनौतियां हैं जो विश्व के सामने हैं? गैर संक्रामक रोग, जीवनचर्या से जुड़े रोग जैसे उच्च रक्तचाप, मधुमेह, एवं कर्कटारुद (कैंसर) सबसे बड़ी स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियां बन गए हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुमान के अनुसार गैर संक्रामक रोगों से प्रतिवर्ष 38 मिलियन लोग मरते हैं, इनमें से 28 मिलियन निम्न एवं मध्य आय वर्ग वाले देशों में होती हैं। आयुर्वेद इनके प्रबंधन हेतु समाधान प्रस्तुत करता है।

संतों एवं संन्यासियों की लंबी परम्परा, जिसने स्वास्थ्य हेतु आयुर्वेद, योग एवं सिद्ध विज्ञान जैसी पद्धतियों की रचना की, प्रकृति से सामंजस्यपूर्ण संबंधों में विश्वास करती है।

यह सारी पद्धतियां संतुलन का प्रयास करती हैं एवं पर्यावरण के अनुकूल व्यवहार एवं जड़ी बूटियों के दीर्घकालिक उपचार से स्वास्थ्य की रक्षा करती हैं।

दुर्भाग्यवश कई वजहों से आयुर्वेद की वास्तविक सामर्थ्य का प्रयोग नहीं हो पाया है। अपर्याप्त वैज्ञानिक अनुसंधान और मानक एवं गुणवत्ता संबंधी चिंताएं इनमें प्रमुख कारण हैं।

यदि इन विषयों पर ठीक से ध्यान दिया जाए, मैं आश्वस्त हूं कि आयुर्वेद से कई स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का समाधान निकल सकता है। भारत विश्व को सर्वांगीण स्वास्थ्य रक्षा सरलता से मुहैया कराने के मामले में नेतृत्व प्रदान कर सकता है।

इन विषयों के बारे में हम क्या कर सकते हैं, एवं हम क्या कर रहे हैं?

हमारी सरकार आयुर्वेद एवं परम्परागत औषधियों को प्रोत्साहन देने के लिए पूर्णतः समर्पित है। इस सरकार के बनते ही आयुष विभाग को भारत सरकार के एक पूर्ण मंत्रालय में तब्दील कर दिया गया था।

आयुष औषधीय पद्धति का उन्नयन करने के लिए राष्ट्रीय आयुष मिशन शुरू किया गया है। इसके तहत लागत कुशल आयुष सेवाएं, शैक्षिक संस्थाओं का सशक्तिकरण, आयुर्वेद, सिद्ध एवं यूनानी और होम्योपैथी दवाओं का गुणवत्ता नियंत्रण एवं कच्चे माल की दीर्घकालिक उपलब्धता सुनिश्चित की गई है।

आयुष औषधियों के गुणवत्ता नियंत्रण हेतु केंद्र एवं राज्यों के स्तर पर नियमन के प्रावधानों में संशोधन लाने एवं नियमन के ढांचे को सशक्त बनाने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं।

दवाओं के केंद्रीय मानक नियंत्रण संगठन में आयुष दवाओं का ढांचा खड़ा किया जा रहा है, भ्रामक विज्ञापनों पर नियंत्रण एवं गुणवत्ता नियंत्रण गतिविधियों के लिए राष्ट्रीय आयुष मिशन के अंतर्गत राज्यों की वित्तीय सहायता में विस्तार- वे अहम कदम हैं जो जारी हैं।

योग विशेषज्ञों का कौशल एवं ज्ञान की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए गत वर्ष 22 जून को समग्र स्वास्थ्य के लिए योग विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान योग पेशवरों के स्वैच्छिक प्रमाणन की योजना प्रारंभ की गई थी।

आयुर्वेद एवं औषधियों की अन्य भारतीय पद्धतियों के बारे में हमारी नीति विश्व स्वास्थ्य संगठन की पारम्परिक दवा रणनीति 2014-2023 के अनुरूप है, जिसको संगठन के 192 देशों द्वारा क्रियान्वयन हेतु विश्व स्वास्थ्य असेंबली के दौरान अपनाया गया था।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रणनीति में स्वास्थ्य, तंदुरुस्ती एवं व्यक्ति केंद्रित स्वास्थ्य सेवाओं के लिए पारंपरिक एवं संपूरक औषधियों के योगदान का प्रयोग करने की विधियां हैं।

स्वामी विवेकानंद के शब्दों में, अतएव, हमें- "पूर्व के श्रेष्ठतम का पश्चिम के श्रेष्ठतम से मेल करना चाहिए।"

औषधियों की आधुनिक पद्धतियों में सशक्त एवं प्रभावी नैदानिक तरीके हैं जिनसे हमें रोगों की शीघ्र पहचान करने में मदद मिलती है। स्वास्थ्य सेवाओं में तकनीक के प्रयोग में देखभाल के रास्ते की बाधाएं कम करने और रोग के स्वरूप के

प्रति हमारी समझ विकसित करने की सामर्थ्य है।

यद्यपि हमें इसके इतर देखने की आवश्यकता भी है। हमें स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया करवाने एवं बेहतर स्वास्थ्य की तलाश के साथ शारीरिक एवं मानसिक तंदुरुस्ती के संयोजन से इतर देखने की भी ज़रूरत है।

उपचार की बढ़ती कीमत एवं दवाओं के दुष्प्रभाव ने चिकित्सा विशेषज्ञों को औषधियों की पारंपरिक पद्धतियों के क्षितिज का विस्तार करने के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया है।

हम अपनी सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं में शोध के नियमन एवं स्वास्थ्य सेवाओं में उत्तम उत्पादों, तौर तरीकों एवं चिकित्सकों के समेकन के माध्यम से पारंपरिक औषधियों के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए समर्पित हैं।

हमारा प्रयास है कि आयुर्वेद एवं अन्य आयुष पद्धतियों की वास्तविक सामर्थ्य का प्रयोग लोगों को सुरक्षात्मक, प्रोत्साहक एवं संपूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में किया जाए।

हम आयुर्वेद एवं अन्य उपचारात्मक पद्धतियों का प्रयोग उनके स्वभाव एवं सूक्ष्मता के अनुरूप बढ़ाएंगे एवं संपूर्ण चिकित्सा सुविधाओं के उन्नयन में सहायता करेंगे। युवा उद्यमी, जो किसी स्टार्टअप की योजना बना रहे हों, वे समग्र स्वास्थ्य सेवाओं में कई अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

स्वास्थ्य क्षेत्र की योजना के संदर्भ में एक ओर जहां हम आयुर्वेद और अन्य पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों की उपयोगिता एवं समकालीन प्रासंगिकता के बारे में चर्चा करते हैं, इन पद्धतियों की वस्तुस्थिति एवं चुनौतियों पर चिंतन करना भी महत्वपूर्ण है।

ग्रामीण क्षेत्रों में पारम्परिक औषधियां कई लोगों के लिए वहन करने योग्य हैं। यह सबके लिए स्थानीय स्तर पर उपलब्ध है, अपनी प्रभावोत्पादकता एवं हिफाज़त के लिए समय द्वारा परीक्षित है। सबसे अहम है कि यह उन समुदायों की संस्कृति एवं पारिस्थितिकी तंत्र के अनुरूप है जहां यह पैदा होती है।

विकासशील देशों के कई हिस्सों में निर्धनों की वित्तीय एवं भौतिक पहुंच के दृष्टिकोण से परम्परागत चिकित्सा पद्धतियां अकेला संसाधन हैं।

इसलिए यह और अधिक महत्वपूर्ण है कि हम इन पद्धतियों की गुणवत्ता सुनिश्चित करें।

यहां आयुर्वेद से जुड़े समस्त महानुभाव इस पर सहमत होंगे कि आयुर्वेद के सुरक्षा, फलोत्पादकता, गुणवत्ता, पहुंच जैसे पक्षों एवं हमारे पारम्परिक औषधीय ज्ञान का तर्कसंगत उपयोग आदि मामलों पर ध्यान देना हमारे लिए महत्वपूर्ण है।

मैं जानता हूं कि चीन में पारम्परिक चीनी दवाओं के सुरक्षित उपयोग पर नीतियों के विकास एवं नियमन हेतु बड़े प्रयास हो रहे हैं, जिनसे संपूरक एवं वैकल्पिक औषधियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का बड़ा हिस्सा जुड़ा है।

हम दूसरे देशों के अनुभव से सीखेंगे और सुनिश्चित करेंगे कि आयुर्वेद एवं दूसरी भारतीय पद्धतियां लोकप्रिय एवं प्रसारित हों।

मुझे बताया गया है कि फरवरी 2013 में पारम्परिक औषधियों पर दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों द्वारा स्वीकृत दिल्ली घोषणापत्र, जिसे विश्व स्वास्थ्य संगठन की क्षेत्रीय समिति द्वारा स्पष्ट किया गया था, में सदस्य देशों द्वारा पारम्परिक औषधियों के विकास संबंधी गतिविधियों हेतु सुसंगत दृष्टिकोण अपनाने की कोशिश की गई है।

मैं आशा करता हूं कि दिल्ली घोषणापत्र के अनुच्छेदों के विधिवत क्रियान्वयन से राष्ट्रीय, क्षेत्रीय एवं वैश्विक स्तर पर आयुर्वेद समेत पारम्परिक औषधियों के सुनियोजित विकास में मदद मिलेगी।

हम आयुर्वेद एवं अन्य आयुष पद्धतियों में प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण और सूचना एवं प्रौद्योगिकी विनिमय कार्यक्रमों हेतु अपने संस्थानों को निर्दिष्ट केंद्रों के तौर पर प्रस्तावित करते हैं।

इन क्षेत्रों में हमारा नेतृत्व केवल निरंतर प्रयासों से बना रह सकता है जिनमें उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवाएं और शिक्षा प्रदान की

जाए एवं प्रतिस्पर्धी व्यवसायी पैदा किए जाएं।

देवियो एवं सज्जनो, जैसा कि आप जानते हैं, भारत में आयुर्वेद एवं योग का लंबा इतिहास एवं संपन्न धरोहर है। आयुर्वेदिक ज्ञान का बहुसांस्कृतिक उद्गम शास्त्रों में उद्घाटित है। चरक संहिता एवं सुश्रुत संहिता दोनों ही वैद्यों से औषधीय पौधों हेतु चरवाहों, बहेलियों एवं वनवासियों की मदद लेने का अनुरोध करती हैं।

आयुर्वेद के सिद्धांतों की रचना हेतु आयोजित विद्वज्जनों की एक सभा में मध्य एशिया से एक वैद्य के सम्मिलित होने और योगदान देने की बात चरक संहिता से पता चलती है।

तीन महत्वपूर्ण शास्त्रीय इबारतें बुद्ध की नैतिक शिक्षाओं पर बल देती हैं। वाग्भट्ट, जिसको आयुर्वेद के एक शास्त्रीय ग्रंथ अष्टांग हृदयम् का रचयिता कहा जाता है, बौद्ध था।

इससे सिद्ध होता है कि यह परम्पराएं स्थानीय स्तर पर एवं विभिन्न संस्कृतियों के मध्य ज्ञान साझा करने से विकसित हुई हैं। उन्होंने इसको सर्वाधिक विनीत भाव रखने वालों से एवं गुप्तज्ञान वालों से सीखा है।

हम इस कोशिश को जारी रखेंगे। हम अपनी पद्धतियों के ज्ञान को विश्व से साझा करेंगे, और दूसरी पद्धतियों से सीखने की अपनी परम्परा को सम्पन्न बनाते रहेंगे।

विश्व आयुर्वेद सम्मेलन इसी दृष्टिकोण को आगे ले जाता है।

मैं विश्व आयुर्वेद महोत्सव एवं विज्ञान कॉन्क्लेव की सर्वोच्च सफलता की कामना करता हूं। मेरा विश्वास है कि महोत्सव में होने वाला विमर्श आयुर्वेद के वैश्विक स्थापन के लिए महत्वपूर्ण बिंदुओं पर ध्यान देगा।

मैं अपनी बात आयुर्वेद के सुप्रसिद्ध ग्रंथ अष्टांग हृदयम् के शब्दों के साथ समाप्त करता हूं।

व्याधियों से पीड़ित एवं दुखों से संतप्त निर्धनों की सहायता करनी चाहिए। यहां तक कि कीटों एवं चींटियों से भी करुणापूर्वक व्यवहार किया जाना चाहिए, जैसा स्वयं के प्रति किया जाता है।

यह आयुर्वेद की मार्गदर्शक विचारधारा है। आइए हम सब इसको अपनी मार्गदर्शक विचारधारा बनाएं।

धन्यवाद।

एबी/एमएस-655

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

22-जुलाई-2016 20:27 IST

गोरखपुर उर्वरक संयंत्र के पुनरुद्धार एवं गोरखपुर एम्स के शिलान्यास समारोह में जनसभा को प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

भारत माता की जय, भारत माता की जय,

मंच पर विराजमान सभी वरिष्ठ महानुभव और विशाल संख्या में पधारे हुए गोरखपुर के मेरे प्यारे भाइयों और बहनों,

गोरखपुर में हाथ कारखाना और AIIMS के शिलान्यास कार्यक्रम में उपस्थित युवा सभी के प्रणाम, मैं सबसे पहले आप सबका अभिनंदन करना चाहता हूँ, अगर कोई कहता है कि छब्बीस साल से बंद पड़ा हुआ कारखाना मेरे कारण हुआ, मोदी के कारण हुआ तो ये बात गलत है। ये छब्बीस साल के बाद ये कारखाना फिर शुरू होना है, अगर उसका credit, उसका पूरा यश अगर किसी को जाता है तो आप सब जनता जर्नादन को जाता है। अगर आपने मुझे उप्र देश से चुनकर के न भेजा होता, अगर आपने उप्र में एक तरफा भारतीय जनता पार्टी और साथियों को न जिताया होता, तो ये छब्बीस साल वाला काम अभी भी लटका पड़ा हुआ होता। ये इसलिए हुआ है क्योंकि आपने दिल्ली में आप लोगों के लिए काम करने वाली सरकार बनाई है, इसलिए ये काम हो रहा है। अगर आप अपने हितों को ध्यान में रख करके सरकार चुनते हैं तो सरकार भी आपके लिए काम करने के लिए दौड़ती है।

मुझे आपको इस बात के लिए अभिनंदन करना है पूरे उत्तर प्रदेश में अगर आपने हमें ऐसा बल न दिया होता तो हिन्दुस्तान में तीस साल के बाद जो मजबूत और स्थिर सरकार बनी है, वो कभी नहीं बन पाती इसलिए मैं आपका और उप्र का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

आपका तीसरा अभिनंदन मुझे करना है खास करके पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों का आपने पूरे पूर्वी उप्र में हमारे ऐसे होनहार सांसदों को चुना है, ऐसे जागरूक सांसदों को चुना है, ऐसे सक्रिय सांसदों को चुना है जिसके कारण वो दिन-रात दिल्ली में जमाते हैं आपके सवाल को लेकर के मेरे से भी लोहा ले लेते हैं, इसलिए मैं आपको अभिनंदन देता हूँ। और लोग मुझे पूछते हैं कि मोदी जी आप सोते कब हो? अरे आपने ऐसे मजबूत सांसद भेजे हैं, वो मुझे सोने देंगे क्या? आज, आज ये जो सिद्धि हो रही है इसकी credit योगी आदित्यनाथ जी से लेकर सारे MP जरा खड़े हो जाएं एमपी, यही MP हैं जिन्होंने दिन-रात काम किया है उसके कारण आज एक के बाद एक काम सफल हो रहे हैं। मैं उनका अभिनंदन करता हूँ उनका सम्मान करता हूँ।

भाइयों बहनों मेरा प्रारम्भ से मत रहा है कि अगर भारत का विकास करता है तो दो पहिओं पर ये विकास का रथ हमको चलाना पड़ेगा। एक पहिया पश्चिमी भारत का है और दूसरा पहिया पूर्वी भारत का। अगर पूर्वी भारत का पहिया मजबूत नहीं होगा अकेला पश्चिम वाला पहिया ही मजबूत होगा गुजरात है, महाराष्ट्र है, कर्नाटक है, राजस्थान है, हरियाणा है, गोवा है, ये सब हिन्दुस्तान का पश्चिमी इलाका है अगर वही मजबूत हुआ और भारत का पूर्वी छोड़ पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, आसाम, उड़ीसा, नार्थ-ईस्ट ये हमारे देश का पूर्वी इलाका अगर इसका पहिया मजबूत नहीं हुआ तो ये भारत का विकास रथ तेज गति से नहीं चल सकता और इसलिए भाइयों बहनों मेरी पूरी ताकत लगी है कि हिन्दुस्तान के इस पूर्वी भारत का पहिया भी मजबूत बने पश्चिम की तरह ये पहिया भी विकास रथ को आगे ले जाना वाला बने। इसलिए भाइयों बहनों अगर पूर्वी भारत को आगे बढ़ाना है तो हमें क्रांतिकारी रूप से आगे बढ़ना पड़ेगा।

भारत में दूसरी कृषि क्रांति second green revolution अगर कहीं होने वाला है तो पूर्वी भारत में होने वाला है, पूर्वी उत्तर प्रदेश से होने वाला है अगर second green revolution करना है तो हमारे किसान को खाद चाहिए, फर्टिलाइजर चाहिए आपने ऐसा कभी देखा है भाइयों कि घर में तो फर्टिलाइजर के कारखाने बंद पड़े हों, नौजवान बेराजगार बैठे हों, इलाके का विकास अटक गया हो और दिल्ली में बैठी हुई सरकार विदेशों से उर्वरक मंगाते रहे, विदेशों से फर्टिलाइजर मंगवाते रहे, ऐसी गलती कोई सामान्य मानवी भी करेगा क्या? कोई करेगा क्या? अरे आपके घर में अगर खाने का सामान पड़ा है, तो आप बाहर से किसी से मांग कर लाएंगे क्या? लेकिन ये दिल्ली में ऐसी सरकार घर के कारखाने बंद, लेकिन उर्वरक बाहर से

एक सौ अस्सी करोड़ बाकी रहा। कहां हजारों करोड़ का बकाया और कहां एक सौ पच्चतहर करोड़ रुपया बकाया? और इतना ही नहीं जो वर्तमान का हिसाब है उसमें भी 93% भुगतान हो चुका है और मैं उत्तर प्रदेश सरकार से आग्रह करूंगा कि जब भारत सरकार ने इतनी मदद की है तो 7% के लिए क्यों रोक कर के बैठे हो उनको भी पूरा कर दीजिए और वर्तमान भी शत-प्रतिशत भुगतान हो जाना चाहिए।

भाइयों बहनों दुनियां में चीनी का दाम कम हो, अधिक हो उसका सीधा माप हमारे किसान पर पड़ता है हमनें भाइयों बहनों चीनी के साथ-साथ इथनोल का भी काम साथ-साथ शुरू कर दिया। गन्ने से चीनी बनने से पहले इथनोल बनाओ, सरकार उसको खरीद करेगी ताकि चीनी का दाम कम अधिक हो जाए, तो भी मेरा गन्ने का किसान कभी उसको मुसीबत झेलनी न पड़े, ऐसी permanent व्यवस्था करने का हमने काम किया है और हमने पर्यावरण की भी रक्षा की है। हमारी गाड़ियों में, ट्रैक्टर में इथनोल का उपयोग हो सकता है सरकार ने अधिकृत रूप से उसकी परमीशन दे दी है।

भाइयों बहनों किसान की कैसे मदद की जा सकती है किसान के जीवन में कैसे बदलाव लाया जा सकता है। ये फर्टिलाइजर का कारखाना कुछ लोग कहेंगे कि एक कारखाना ये सिर्फ एक कारखाना नहीं है ये सिर्फ किसानों के लिए यूरिया पैदा करने वाला मामला नहीं है ये बहुत बड़ा बदलाव सबसे बड़ा बदलाव ये है कि आप इस इलाके की economy Gas based economy बनेगी। जगदीशपुर-हल्दिया जो गैस की पाइप लाइन जाती है उस पाइप लाइन से अब गोरखपुर और पूर्वी उप्र के इस बेल्ट में गैस लाना शुरू होगा। ये कारखाना उस गैस के आधार पर यूरिया पैदा करेगा उसका खर्चा कम होगा लेकिन ये गैस सिर्फ कारखाने के लिए नहीं रहेगा।

गोरखपुर के हर घर में पाइपलाइन से जैसे पाइपलाइन से पानी आता है वैसे ही पाइपलाइन से गैस आएगी। इस पूरे इलाके की माता एवं बहनें मुझे आशीर्वाद दीजिए, मैं आपके लिए हर चुल्हे में पाइपलाइन से गैस पहुंचाने का सपना ले करके काम कर रहा हूं। इसके कारण जब बिजली मिले, गैस मिले तो और काम करने वाले नौजवान मिल जाएं तो उद्योग लगाने वालों की लाइन लग जाती है।

ये पूरे उत्तर प्रदेश में औद्योगिक क्रांति का भी ये प्रारंभ हो रहा है। भाइयों और बहनों ये सिर्फ एक कारखाने की योजना नहीं है। लेकिन ये ऐसी विजय यात्रा का आज शिलान्यास हुआ है। एक ऐसी विजय यात्रा का शिलान्यास हुआ है, जो विजय यात्रा गरीबी को परास्त करने की विजय यात्रा है। जो विजय यात्रा बेरोजगारी को परास्त करने की विजय यात्रा है। जो विजय यात्रा विनाश को रोक करके विकास की ओर चलने की विजय यात्रा है। जो विजय यात्रा हर परिवार को संतोष और सुख देने की विजय यात्रा का हिस्सा है। उस विजय यात्रा का आज यहां प्रारंभ हुआ है।

भाइयों और बहनों, गैस जब आता है तो आर्थिक स्थिति में कैसे बदलाव आता है, जो लोग इसके जानकार हैं वो आने वाले दिनों में लिखेंगे।

आज दूसरा काम हम कर रहे हैं वो काम है AIIMS का शिलान्यास। भाइयों और बहनों अस्पताल तो बहुत होते हैं लेकिन भारत में AIIMS को एक मानदंड माना गया है। आप मुझे बताइयें क्या AIIMS दिल्ली वालों के लिए ही है क्या? क्या मेरे उत्तर प्रदेश के बीमार भाइयों और बहनों को AIIMS मिलना चाहिए कि नहीं मिलना चाहिए? यहां से दूर दूर से लोगों से दिल्ली जाना पड़ता है, उनको यहाँ दवाई मिलनी चाहिए कि नहीं मिलनी चाहिए। भाइयों और बहनों एक हजार करोड़ से ज्यादा रुपया लगेंगे। लेकिन एक बनेगा 700 bed का आधुनिक से आधुनिक अस्पताल बनेगा। अभी हमारे नड्डा जी और अनुप्रिया के नेतृत्व में भारत में आरोग्य की योजनाओं को आगे बढ़ाने की दिशा में अनेक हम कदम उठा रहे हैं। उसमें एक महत्वपूर्ण कदम आज गोरखपुर में AIIMS को हम लागू कर रहे हैं।

भाइयों और बहनों, मैं जब चुनाव में आया था तब मैंने आपके यहां इस बात का उल्लेख किया था और जब मैंने मस्तिष्क के ज्वर का सुना था। भारत में जापानी बीमारी कहते थे लोग जापानी बीमारी, जापानी बीमारी। कितने बालक मौत के शरण हो गये, कितने बालक दिव्यांग हो गये, भाइयों और बहनों बचपन को मरने नहीं दिया जाएगा। इन बच्चियों को मरने नहीं दिया जाएगा और मैंने उस समय कहा था बिहार के जिस belt में काला ज्वार की मुसीबत थी। उसके पीछे हम लग गये। ज्वाला झार से मुक्ति दिलाने की दिशा में अहमतापूर्वक आगे बढ़ रहे हैं। आज AIIMS के माध्यम से यहां के स्वस्थ जीवन के लिए मैं भाइयों और बहनों यहां के स्वस्थ जीवन के लिए मैं भाइयों और बहनों यहां के स्वस्थ जीवन के लिए मैं भाइयों और बहनों ये दीमागी बुखार जिसने हमारे बच्चों की जिंदगी बर्बाद की। यहां इसलिए उत्थान चाहिए यहां जिस प्रकार की बीमारियां हैं अध्ययन उस प्रकार का होना चाहिए। यहां जो डॉक्टर तैयार होंगे उनकी उस पर मास्टरी होनी चाहिए। तब जा करके यहां तो बीमार लोगों को मदद मिलेगी। और इसलिए भाइयों और बहनों आज AIIMS का यहां जब योजना लगी है, बहुत की कम समय में मैंने आज इसका पूरा प्रोजेक्शन देखा।

इस समारोह में आने से पहले मैं दो और कार्यक्रम करके आया हूँ। एक महंत अवैद्य नाथ जी की प्रतिमा का अनावरण करने का सौभाग्य मिला। दूसरा भारत सरकार के द्वारा शिलान्यास का कार्यक्रम था। वो दोनों कार्यक्रम करने के बाद ये मैं तीसरे कार्यक्रम में पहुंचा हूँ और ये तीसरे कार्यक्रम में मैं उसकी विस्तार से चर्चा आपके सामने कर रहा हूँ कि भाइयों और बहनों हजारों करोड़ रूपया यहां के गरीब से गरीब व्यक्ति को अच्छी स्वास्थ्य सुविधा मिले। इसके लिए हमने काम किया है। मैं आज हमारे आरोग्य मंत्री नड्डा जी को, आरोग्य मंत्री अनुप्रिया जी को, उनके सभी साथियों को, सरकार के अधिकारियों को एक बात के लिए बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूँ। उन्होंने जो इन्द्रधनुष योजना चालू की और हम जानते हैं टीकाकरण होता रहता है, जो छूट जाते हैं वो छूट जाते हैं फिर उनकी तरफ देखना वाला नहीं है। इन्द्रधनुष योजना के द्वारा नड्डा जी अनुप्रिया के नेतृत्व में पूरे देश में टीकाकरण से जो लोग छूट गये हैं, जो माताएं छूट गई हैं जो बच्चे छूट गये हैं उनका टीकाकरण का अभियान चला गया। 50 लाख से ज्यादा ऐसे लोगों को खोज खोज करके झुग्गी झोंपड़ी में जा करके जहां भी मिले उनके पास जा करके टीकाकरण का काम करके उनकी जिंदगी बचाने का बड़ा भगीरथ काम किया है, बहुत बड़ा सेवा यज्ञ किया है।

भाइयों और बहनों, हमें विकास की नई-नई उंचाइयों पर हमें पाना है। लेकिन आरोग्य के क्षेत्र में मुझे आज कहना पड़ेगा कि उत्तर प्रदेश के लिए, उत्तर प्रदेश के लिए भारत सरकार ने सात हजार करोड़ रूपया बजट में आवंटित कर दिया है। आरोग्य के लिए सात हजार करोड़ रूपया सामान्य रकम नहीं है। लेकिन आज मुझे दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि अभी तक सात हजार करोड़ रूपया ready पड़ा है। लेकिन उसमें एक नियम है, जैसे-जैसे खर्च करोगे हिसाब दोगे आपको पैसा मिलता जाएगा। ये सरकार 2850 करोड़ रूपये ही ले पाई है, सात हजार करोड़ सात हजार करोड़ रूपया पड़ा है। उसको लेने की फुर्सत नहीं है। क्योंकि काम करने की उनकी ताकत नहीं है। जो सरकार आपके आरोग्य के लिए काम नहीं कर पाए, भारत सरकार पैसे देती हो उसके बाद भी काम अटका पड़ा हो। तो भाइयों और बहनों ये दीमागी बीमारी हो या कोई भी बीमारी हो। आपको कभी स्वास्थ्य नहीं मिल सकता और इसलिए आपने दिल्ली में ऐसी सरकार बनायी आपके लिए दौड़ रही है। लखनऊ में भी ऐसी सरकार हो जो आपके लिए दौड़ने वाली हो।

भाइयों और बहनों एक और काम मुझे करना है, मैं जानता हूँ कि पूर्वी उत्तर प्रदेश में टूरिज्म के लिए बहुत संभावना है। कृषि क्रांति के लिए संभावना है। औद्योगिक क्रांति के लिए संभावना है। भगवान बुद्ध के दुनियाभर में भक्त हैं। वे यहां आना चाहते हैं। अच्छी सड़कें होनी चाहिए। अच्छी रेल की सुविधाएं होनी चाहिए, अच्छी विमान सेवा होनी चाहिए। हमने विमान सेवा में नई पॉलिसी बनाई है। उसके कारण ऐसे गोरखपुर जैसे छोटे-छोटे स्थान पर भी अब विमान आने की संभावना बढ़ेगी। उसके कारण टूरिस्ट आने की संभावना बढ़ेगी। सड़कें बनाने का अभियान चालू किया है। हजारों करोड़ रूपया हम सड़कों के लिए लगा रहे हैं। अगर अच्छी सड़कें इस इलाके में बन जाएं, तो हमारे टूरिस्टों को शान के साथ इस इलाके में जा सकते हैं और जब टूरिस्ट आता है तो गरीब से गरीब व्यक्ति को रोजी-रोटी मिली है। बहुत पैसे खर्च नहीं करने पड़ते। ऑटो रिक्शा वाला भी कमाता है, टैक्सी वाला भी कमाता है, होटल भी कमाता है, चाय बेचने वाला भी कमाता है, बिस्कुट बेचने वाला भी कमाता है, फल-फूल बेचने वाला भी कमाता है, प्रसाद बेचने वाला कमाता है, खिलौने बेचने वाला कमाता है। हर प्रकार से इस तरह के छोटे लोगों को आय होती है और इसलिए टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए भाइयों और बहनों हमने बहुत बड़ी मात्रा में रोड के काम पर बल दिया है। सोनाली से गोरखपुर, नेशनल हाईवे 570 करोड़ रूपये, इंडो-नेपाल बार्डर राजौरी तक 550 करोड़ रूपया, गोरखपुर-वाराणसी four-lane 650 करोड़ रूपया। भाइयों और बहनों ग्रामीण सड़क के लिए तो अलग। ये सारी बातें रेलवे में तो आप देख रहे हैं। कितनी तेज गति से काम चल रहा है आप अपनी आंखों से देख रहे हैं।

भाइयों और बहनों infrastructure को बल दे रहे हैं। दूसरा महत्वपूर्ण काम अभी हमारे पीयूष जी बता रहे थे। आजादी के 70 साल होने वाले हैं। ये 15 अगस्त को देश आजादी के 70 साल मनाने वाला है, लेकिन भाइयों और बहनों मैं एक दिन हिसाब कर रहा था। 18,500 गांव ऐसे हैं आजादी के 70 साल होने आए वहां बिजली का खंभा भी नहीं पहुंचा। कुछ समय पहले मैंने हिसाब-किताब मांगा। अफसरों ने कहा साहब इन 18,500 गांव में पहुंचना है तो सात साल लगेंगे। मैंने कहा भाई ये मोदी है, वो सीढ़ी भी चढ़ता है तो दौड़ के चढ़ता है, सात साल क्या मतलब है भाई? मैंने एक दिन लालकिले पर बोल दिया मुझे एक हजार दिन में काम पूरा करना है एक हजार दिन में। अभी 340 दिन हुए हैं, 340 दिन हुए हैं मेरे भाइयों और बहनों, लेकिन आज मैं गर्व के साथ कह सकता हूँ कि 18,452 गांवों में से 9 हजार 33 गांव में बिजली पहुंच चुकी है।

भाइयों और बहनों, उत्तर प्रदेश में भी 1529 गांव, 1529 गांव ऐसे थे, जो 18वीं शताब्दी में जीने के लिए मजबूर थे। बिजली क्या होती है? उस गांव को पता नहीं था भाइयों और बहनों। उन 1529 गांवों को खोज करके बिजली पहुंचाने का बीड़ा उठा है और आज मैं संतोष के साथ कहता हूँ कि 340 दिन में अब सिर्फ पौने दो सौ गांव सिर्फ अब बचे पौने दो सौ गांव। ये काम भी पूरा कर लिया जाएगा।

भाइयों और बहनों, उत्तर प्रदेश ने मुझे इतना दिया है मैं उत्तर प्रदेश का कर्ज चुकाने के लिए दिन-रात लगा हुआ हूँ, दिन-

रात काम कर रहा हूं।

भाइयों और बहनों, परिवार की राजनीति बहुत हो चुकी, जातिवाद की राजनीति बहुत हो चुकी, अपने-परायों का खेल बहुत हो चुका। हर किसी की झोली भर के देखी आपने। लेकिन आपकी झोली भरी क्या? नौजवानों का भला हुआ क्या? किसान का भला हुआ क्या ? भाइयों और बहनों अब समय आ गया है। मेरे नौजवान सोचिए, ये जातिवाद का जहर, ये परिवारवाद का खेल, उत्तर प्रदेश का भला नहीं करेगा। आप का भी भला नहीं करेगा सिर्फ विकासवाद ही आपका भला करेगा। विकास की राजनीति भला करेगी। और इसमें नये में आपको विकास के लिए निमंत्रण देने आया हूं। आइए जैसे मुझे आर्शीवाद दिया वैसा आने वाले दिनों में आर्शीवाद देते रहिए। आपके सपने पूरे करके रहेंगे। इसी बात के साथ मैं आपका बहुत-बहुत अभिनन्दन करता हूं। आपका बहुत-बहुत अभिनन्दन करता हूं। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं।

अतुल कुमार तिवारी/ अमित कुमार/मधुप्रभा/ ममता

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

25-नवंबर-2016 18:20 IST

भटिंडा में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के आधारशिला समारोह पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

ये मेरा सौभाग्य है कि मुझे फिर एक बार आपके बीच आने का अवसर मिला है। पिछले महीने लुधियाना आया था, तभी मैंने कहा था समय अभाव से मैं भटिंडा नहीं जा पा रहा हूँ लेकिन जल्द से जल्द मैं भटिंडा आऊंगा और आज वो वादा मैं पूरा कर रहा हूँ।

देश के विकास में रोड़ बने, एयरपोर्ट बने, रेल चले, इसका जितना महत्व है, उससे भी ज्यादा सामान्य नागरिकों के लिए Social Infrastructure; जिसमें स्कूल हो, अस्पताल हो, गरीब से गरीब की सेवा हो, गरीब से गरीब को शिक्षा मिले तब जा करके समाज ताकतवर बनता है। और आज भारत सरकार और पंजाब सरकार मिल करके, कंधे से कंधा मिला करके गांव; गरीब; किसान; दूर-सुदूर के इलाके; उनके जीवन में बदलाव लाने के लिए, जहां बिजली नहीं, बिजली पहुंचे; जहां पानी नहीं, पानी पहुंचे; जहां अस्पताल नहीं, वहां अस्पताल बने; जहां स्कूल नहीं, वहां स्कूल बने; उस काम पर बल दे रही है। और उसी के तहत आज भटिंडा में सवा नौ सौ करोड़ रुपये से ज्यादा, करीब-करीब हजार करोड़ रुपये की लागत से AIIMS का निर्माण होने जा रहा है। ये AIIMS सिर्फ बीमारों की बीमारी दूर करेगा ऐसा नहीं, Paramedical की शिक्षा, Nursing की शिक्षा, डॉक्टरी की शिक्षा, यहां के नौजवानों के जीवन में, पूरा-पूरा उनका भविष्य; और एक पीढ़ी का नहीं, आने वाली पीढ़ियों का भी भविष्य बदलने की ताकत इस AIIMS की योजना में बनी हुई है।

कितना बड़ा भला होगा इस इलाके का, मेरे पूर्व वक्ताओं ने इसकी विस्तार से चर्चा की है। और जैसे बादल साहब कहते थे, उद्घाटन की चर्चा इस सरकार का स्वभाव है। जिस काम का शिलान्यास हम करते हैं, उसका उद्घाटन भी हमारे ही कार्यकाल में करते हैं; वरना पहले सरकारें चुनाव आते ही हर गली-मोहल्ले में जा करके पत्थर खड़े करके आ जाते थे। लोगों को समझा देते थे ये होगा, वो होगा; और बाद में भूल जाते थे। हम तो योजना बनाते हैं तो पूछते हैं भाई बताओ किस तारीख को पूरा करोगे; और तब जा करके देश में गति आती है। और इन दिनों तो मैंने देखा है, भारत सरकार Project जो लेती है, उसकी जो तारीख तय करती है, और फिर बनाने वालों में स्पर्धा खड़ी हो जाती है। कुछ लोग तो समय से पहले पूरा करते हैं और ऐसे लोगों को मैं पुरस्कार भी देता हूँ ताकि देश में जल्दी काम करने की आदत बन जाए।

भाइयो, बहनों पाकिस्तान यहां से दूर नहीं है। सीमा पर रहने वाले, सीमा पार से होने वाले जुल्म सहते रहते हैं। सेना के जवान सीने में दम हो, हाथ में हथियार हो, उसके बावजूद भी अपने पराक्रम नहीं दिखा पाते; उनको सहन करना पड़ता है। भाइयो, बहनों, हमारी सेना की ताकत देखिए, 250 किलोमीटर लंबे पट पर जब हमारे सेना के बहादुर जवानों ने Surgical Strike किया, सीमा पार बड़ा हड़कम्प मच गया, अभी भी उनका मामला ठिकाने नहीं लग रहा है। लेकिन मैं पाकिस्तान के पड़ोस में आज खड़ा हूँ तब, सीमा पर खड़ा हूँ तब, मैं फिर एक बार पाकिस्तान की आवाम से बात करना चाहता हूँ। मैं पाकिस्तान की आवाम से कहना चाहता हूँ, ये हिन्दुस्तान है, यहां के सवा सौ करोड़ देशवासी हैं। जब पेशावर में बच्चों को मार दिया जाता है, सवा सौ करोड़ हिन्दुस्तानियों की आंख में आँसू टपकते हैं। आपका दर्द हर हिन्दुस्तानी को भी अपना दर्द लगता है। पाकिस्तान की आवाम तय करे, उनके हुक्मरानों से जवाब मांगे; अरे लड़ना है तो भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ो, लड़ना है तो काले धन के खिलाफ लड़ो, लड़ना है तो जाली नोट के खिलाफ लड़ो; अरे लड़ना है तो गरीबी के खिलाफ लड़ो। ये भारत के साथ लड़ाई लड़ के खुद को भी तबाह कर रहे हो और निर्दोषों की मौत के गुनहगार बनते चले जा रहे हो, और इसलिए पाकिस्तान की आवाम भी गरीबी से मुक्ति चाहती है। कोई कारण नहीं है, अपने राजनीतिक उल्लू सीधे करने के लिए ये तनाव का माहौल बनाए रखा जाता है। और अब पाकिस्तान ने देख लिया है भारत की सेना में दम कितना है, हमारे फौजियों की ताकत कितनी है, अब परिचय करवा दिया है।

भाइयो, बहनों Indus Water Treaty, सतलुज, व्यास, रावी, ये तीन नदियों का पानी, उसमें जो हिन्दुस्तान के हक का पानी है, ये मेरे किसान भाइयों के हक का पानी है। वो पानी आपके खेत में नहीं आ रहा, पाकिस्तान के माध्यम से समुद्र में बह जाता है। न पाकिस्तान उसका उपयोग करता है, न हिन्दुस्तान के किसान के नसीब आता है। मैं एक बड़ी मकमता के साथ आगे बढ़ रहा हूँ। मैंने एक task force बनाया है, ये Indus Water Treaty जो है, जिसमें हिन्दुस्तान के हक का पानी है; जो पाकिस्तान में बह जाता है, अब वो बूंद-बूंद पानी रोक करके मैं पंजाब के, जम्मू-कश्मीर के, हिन्दुस्तान के किसानों के लिए वो पानी लाने के लिए कृतसंकल्प हूँ।

भाइयो, बहनों, कोई कारण नहीं है, हम हमारे हक का भी इस्तेमाल न करें। और मेरा किसान पानी के बिना तरसता रहे। आपके मुझे आशीर्वाद चाहिए भाइयो, बहनों, आपके खेतों को भी लबालब पानी से भरने का इरादा ले करके मैं चल रहा हूं। पानी की समस्या के समाधान हैं। मिल-बांट करके रास्ते निकल सकते हैं। पाकिस्तान में पानी चला जाए और दिल्ली में सरकारें आईं, चली गईं, सोती रहीं, और मेरा किसान रोता रहा।

भाइयो, बहनों और पंजाब के किसान को तो अगर पानी मिल जाए, तो मिट्टी में से सोना पैदा करके देश की तिजोरी भर देता है, देश का पेट भर देता है। उस किसानों की चिंता करना, उनको हक दिलाना, ये दिल्ली में बैठी हुई सरकार भी बादल साहब के साथ कंधे से कंधा मिला करके चलने वाली सरकार है।

भाइयो, बहनों मैं आज किसानों से एक बात आग्रह से करना चाहता हूं। कोई ये तो कहेगा कि मोदी को राजनीति आती नहीं है, चुनाव सामने हैं और किसानों को ऐसी सलाह देता है। मेरे किसान भाइयो, बहनों मुझे चुनाव के गणित से कोई लेना-देना नहीं है। मुझे तो मेरे किसान का भला हो, यही मेरा हिसाब-किताब है। आप मुझे बताइए मेरे किसान भाइयो, बहनों आज से पहले जब हमें पूरा ज्ञान नहीं था, खेतों में फसल काटने के बाद हमारी जो परारी रहती थी, उसको हम जला देते थे। तब हमें ज्यादा ज्ञान नहीं था, हमको लगता था कि इसके कारण खेत बरबाद हो रहा है, जला दो। कभी जल्दबाजी रहती थी इसलिए जला दो। लेकिन अब विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि जिस खेत में जो फसल होती है, उसकी फसल काटने के बाद जो wastage निकलता है, परारी कहें, कुछ भी कहें, वो उस खेत में जो धरती माता है वो उसका उत्तम से उत्तम खुराक होती है। अगर उसी को एक बार मशीन घुमा दें, ट्रैक्टर घुमा दें, जमीन में गाड़ दें, तो आप ही के खेत की वो धरती माता की अच्छे से अच्छी खुराक होती है।

मेरे किसान भाइयो, बहनों, जैसे धरती मां को पानी की प्यास लगती है, वैसे धरती मां को भूख भी लगती है, उसको खाना भी चाहिए। ये परारी अगर उसके पेट में फिर से डाल दोगे, तो ये धरती मां आपको आशीर्वाद देती है, उससे दस गुणा आशीर्वाद देगी और आपका खेत फलेगा-फूलेगा भाइयो, बहनों। और इसलिए इसको जलाओ मत, ये आपकी संपत्ति है। अरबों-खरबों रुपयों की संपत्ति मत जलाओ। और मैं सिर्फ पर्यावरण के नाम पर बातें करने वाला व्यक्ति नहीं हूं, मैं तो सीधा-सीधा किसान की भलाई की बातें करने वाला हूं। और इसलिए पंजाब हो, हरियाणा हो, पश्चिम उत्तर प्रदेश हो, उत्तरी राजस्थान हो, हम ये परारी न जलाएं। और अब तो विज्ञान आगे बढ़ रहा है, ये wastage में से Ethanol बनने की संभावनाएं साफ नजर आ रही हैं। भारत सरकार उस पर बड़ा तेजी से काम कर रही है। आने वाले दिनों में हमारे किसानों को उसका लाभ मिलेगा, और जब लाभ मिलेगा तो परारी से भी पैसा आएगा। और इसलिए मेरे भाइयो, बहनों आज से संकल्प करो हमारी इस धरती माता का हक का जो खाना है, उसको हम जला नहीं देंगे, उसको उसी जमीन में गाड़ देंगे, वो खाद बन जाएगा; मां का पेट भी भरेगा; उत्तम फसल भी होगी; जो देश का भी पेट भरेगा और इसलिए मैं आज आपसे आग्रह करने आया हूं।

भाइयो, बहनों आप जानते हैं भ्रष्टाचार ने, काले धन ने, इस देश के मध्यम वर्ग को लूटा है, उसका शोषण किया है और भ्रष्टाचार, काले धन ने गरीबों को उसके हकों से वंचित रखा है। मुझे मध्यम वर्ग का शोषण बंद करवाना है, उनके लिए लूट जो हो रही है; वो लूट बंद करवानी है, और मुझे गरीबों का जो हक है वो हक दिलवाना है। कुछ भी काम करो, बच्चों को स्कूल ले जाना है तो भी स्कूल वाला कहता है, Cheque से इतना लेंगे Cash में इतना लेंगे; जमीन खरीदनी है, बोले Cash से इतना लेंगे Cheque से इतना लेंगे, अस्पताल डॉक्टर के पास जाना है, Cash इतना दो, Cheque इतना दो। ये काला कारोबार देश को दीमक की तरह खाता चला जा रहा है। और इसलिए भाइयो, बहनों 500 और 1000 रुपये के नोट पर प्रतिबंध लगाया है, नई नोट धीरे-धीरे आने वाली है और देश की जनता ने जो तकलीफ झेली है, कठिनाई झेली है; भाइयो, बहनों करोड़ों-करोड़ों देशवासियों का शुक्र गुजारने के लिए मेरे शब्द भी कम पड़ जाते हैं। इतना आपने कष्ट झेलने के बाद भी इस अच्छे काम के साथ आप खड़े रहे हो; इमानदारी के काम के साथ खड़े रहे हो।

भाइयो, बहनों कठिनाइयों का रास्ता भी है और उस रास्ते के लिए मैं आपकी मदद चाहने आया हूं। आप, आपके पास जो Mobile Phone है, वो सिर्फ Mobile Phone नहीं है। आपके Mobile Phone को आप अपनी खुद की बैंक बना सकते हो, आपके Mobile Phone को आप अपना बटुआ बना सकते हो, एक भी रुपये का कैश नोट न हो तो भी आज का विज्ञान ऐसा है, Technology ऐसी है; अगर आपके पैसे बैंक में जमा पड़े हैं तो आप Mobile Phone से बाजार से खरीदी कर सकते हैं, Mobile Phone से payment दे सकते हैं, हाथ को, रुपये को छुए बिना भी आपका पूरा कारोबार कर सकते हैं।

हमारे देश में जितने परिवार हैं, उससे चार गुना Telephone हैं हाथ में लोगों के। Mobile Phone हैं। आज Mobile Banking चलता है, भविष्य में भी भ्रष्टाचारियों को फिर से अगर उठने नहीं देना है, काले धन वालों को उठने नहीं देना है,

तो मैं देशवासियों से आग्रह करता हूँ कि आप अपने Mobile Phone में ही Bank का Branch बना दो। Mobile Phone पर बैंकों के App होते हैं, उसको download करिए। मैं नौजवानों को कहूँगा, Universities को कहूँगा, राजनेताओं को कहूँगा कि अपने इलाके में नागरिकों का प्रशिक्षण करें, व्यापारियों को शिक्षा करें। हरेक के Mobile में अगर App आ गया तो मैं जिस दुकान में जाऊँगा उसको कहूँगा कि मेरे पास ये App है, मुझे 200 रुपये का सामान चाहिए, आप Mobile Phone में नम्बर लगाइए, 200 रुपया एक सेकेंड में उसके पास चला जाएगा, और वो देखेगा हां मेरा 200 रुपया आ गया, आपका काम हो गया।

भाइयो, बहनों अब वो जमाना चला गया, कि जेब में नोट भर-भरके जाना पड़े, चोर-लुटेरों का भी भी कोई भय नहीं। भाइयो, बहनों जाली नोट, जाली नोट, इसने हमारे देश के नौजवानों को तबाह किया है। मेरे देश के नौजवानों को बचाने के लिए जाली नोटों का भी खात्मा करना, ये समय की मांग है। और इसलिए मेरे प्यारे भाइयो, बहनों मैं आपसे आग्रह करता हूँ, मैं आपसे आग्रह करने आया हूँ, कि आप पूरा समर्थन दे करके ये देश को महान बनाने का जो अभियान चला है, उस अभियान में कंधे से कंधा मिला करके चलिए; हर किसी की मदद कीजिए; और हमारे पंजाब को आगे ले जाइए।

ये पंजाब का सौभाग्य है कि बादल साहब जैसे ऐसे एक महान नेता पंजाब की धरती पर हैं। ये देश इस बात का गर्व करता है जब हिन्दुस्तान के Youngest Chief Minister की चर्चा होती थी तो कहा जाता था भारत का सबसे Youngest कोई मुख्यमंत्री है तो प्रकाश सिंह बादल है। और आज हिन्दुस्तान में सबसे वरिष्ठ मुख्यमंत्री कौन है उसकी चर्चा होती है तो वो भी प्रकाश सिंह बादल है। इतने लम्बे अरसे तक जनता-जनार्दन का एक व्यक्ति के प्रति विश्वास, ये कितना बड़ा तपस्या का रास्ता है जो हम सब अनुभव करते हैं।

आइए भाइयो, बहनों, पंजाब के भाइयो-बहनों, पंजाब के उज्जवल भविष्य के लिए ये दिल्ली आपके साथ है; दिल से आपके साथ है; मिल करके चलना है, नया पंजाब बनाना है; ताकतवर पंजाब बनाना है; यहां के नौजवानों के जीवन को बदलने वाला पंजाब बनाना है; और AIIM से एक नया Chapter खुल रहा है जो स्वस्थ पंजाब की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

मैं फिर एक बार आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ, बादल साहब का धन्यवाद करता हूँ।

अतुल कुमार तिवारी/शाहबाज़ हसीबी /निर्मल शर्मा